मूल ग्रंथ सूची

1. **बदनाम बस्ती**, निर्देशक - प्रेम कपूर (1971)
2. **सड़क**, निर्देशक - महेश भट्ट (1991)
3. **फायर**, निर्देशक - दीपा मेहता (1996)
4. **दरमियाँ - इन बिटवीन**, निर्देशक - कल्पना लाजमी (1997)
5. **तमन्ना**, निर्देशक - महेश भट्ट (1997)
6. **संघर्ष**, निर्देशक - तानुजा चंद्रा (1999)
7. **गर्लफ्रेंड**, निर्देशक - किरण रावत (2004)
8. **माई ब्रदर निखिल**, निर्देशक - ओनिर (2005)
9. **शबनम मौसी**, निर्देशक - योगेश भारद्वाज (2005)
10. **हनीमून ट्रैवल्स**, निर्देशक - रीमा कागती (2007)
11. **वेलकम टू सज्जनपुर**, निर्देशक - श्याम बेनेगल (2008)
12. **न जाने क्यों**, निर्देशक - अंजा अहीर (2010)
13. **पंख**, निर्देशक - सुधांशु शर्मा (2010)
14. **मेमोरीज इन मार्च**, निर्देशक - संजय नाग (2011)
15. **आई एम**, निर्देशक - ओनिर (2011)
16. **क्वींस डेस्टिनी ऑफ डांस**, निर्देशक - जनभाई (2011)
17. **बॉम्बे टॉकीज**, निर्देशक - करण जौहर (2013)
18. **रज्जो**, निर्देशक - विश्वास पाटिल (2013)
19. **मार्गरीटा विद ए स्ट्रॉ**, निर्देशक - शोनाली बोस (2014)
20. **अणफ्रीडम**, निर्देशक - राज अमित कुमार (2015)
21. **एंग्री इंडियन गॉडेसेस**, निर्देशक - पैन नलिन (2015)
22. **अलीगढ़**, निर्देशक - हंसल मेहता (2015)
23. **टाइम आउट**, निर्देशक - राकेश मेहता (2015)
24. **कपूर एंड सन्स**, निर्देशक - शकुन बत्रा (2016)
25. **एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा**, निर्देशक - शैली धर चौधरी (2019)
26. **शुभ मंगल ज़्यादा सावधान**, निर्देशक - हितेश केवल्या (2020)

27. **लक्ष्मी बॉम्ब**, निर्देशक - राघव लॉरेंस (2020)

28. **खेजड़ी**, निर्देशक - रोहित द्विवेदी (2021)

29. **चंडीगढ़ करे आशिकी**, निर्देशक - अभिषेक कपूर (2021)

30. **बधाई दो**, निर्देशक - हर्षवर्धन कुलकर्णी (2022)

31. **माजा माँ**, निर्देशक - आनंद तिवारी (2022)

32. **गंगूबाई काठियावाड़ी**, निर्देशक - संजय लीला भंसाली (2022)

सहायक ग्रंथ सूची

1. डॉ.के वनजा , क्वीर विमर्श, सतरंगी वाणी,नई दिल्ली, 2021
2. सम्पादक-डॉ.निम्मी, हिन्दी-मलयालम साहित्य एवं सिनेमा में क्वीर विमर्श, माया प्रकाशन,कानपूर, 2021
3. डॉ.इन्दु के वी, किन्नर और फिल्म, प्रवडा बुक्स, कोल्लम,2022
4. डॉ. एम फिरोज़ खान&शिप्रा करण, सिनेमा के निगाह में थर्ड जेंडर,विकास प्रकाशन, कानपूर, 2018
5. देवदत्त पटनायक- धर्म और समलैंगिकता, पेंगुईन बुक्स,2022
6. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी, किन्नर कथा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2010
7. डॉ. विमल कुमार प्रकाशन, किन्नर समाज और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2014
8. सम्पादक- पुरुशोत्तम दूबे,सिनेमा का सौदर्य शास्त्र, जवहर, पुस्तकालय,मधुरा,2015
9. ललित जोशी, बॉलीवुड पाठ और विमर्श के संदर्भ,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2012
10. सम्पादक- डॉ प्रमोद कोवप्रत, समकालीन हिन्दी साहित्य और नए विमर्श, जवहर पुस्कालय, मथुरा, 2015
11. सम्पादक- प्रोफेसर श्रीराम शर्मा, समकालीन हिन्दी साहित्य विविध विमर्श, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2016
12. अनामिका, स्त्री विमर्श का लोकपक्ष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2016
13. सम्पादक- डॉ जाजू किरणबाला एल, 20वीं सदी में स्त्री अस्तित्व से अस्मिता तक,इण्टरनेशनल पब्लिकेशन, कानपूर,2014
14. विनोद भरद्वाज, (सिनेमा कल,आज,कल), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2002
15. डॉ शशीधरन टी, सिनेमा का चार आध्याय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2014

16. डॉ. नरेश कुमार,यौन-शिक्षा और यौन-स्वास्थय -शिक्षा तथा हमारी संस्कृति, ममता प्रकाशन 2011
17. राही मासूम रज़ा, सिनेमा और संस्कृति,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,संस्करण आवृत्ति 2011
18. सम्पादक-आशीष कुमार 'दीपांकर',भारतीय समाज में किन्नरों का यथार्थ,अनुसंधान प्रकाशन,नई दिल्ली, 2012
19. शरद सिंह, थर्ड जेंडर विमर्श, समायिक प्रकाशन, 2019
20. डॉ एम फिरोज़ खान, थर्ड जेंडर साहित्य, विकास प्रकाशन, मधुरा 2018
21. डॉ इकरार अहमद्द, किन्नर विमर्श साहित्य के आईने में, अनुसंधान पब्लिशेर्स, नई दिल्ली, 2017
22. मनोहर श्याम जोशी, पटकथा लेखन: एक परिचय, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली,2010
23. अजय ब्रह्मात्मज, सिनेमा की सोच, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली,2012
24. मृत्युंजय, सिनेमा के सौ वर्ष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2009
25. दिलचस्प, हिन्दी फिल्मों का संक्षिप्त इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2009
26. सत्यजीत राय, हिन्दी सिनेमा : बीसवीं शती से इक्कसवीं शती तक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2012
27. विवेक दुबे , हिन्दी साहित्य और सिनेमा, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली,2009
28. कुंदे पुरुषोत्तम, भारतीय सिनेमा और इतिहास, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद, 2014
29. डॉ चड्ढा मनमोहन, भारतीय सिनेमा का इतिहास,सचिन प्रकाशन, दिवानी, 1990
30. योगेश्वर गाँधी, बहुरूपी सिनेमा, हॉरिटेज इंडिया ट्रस्ट फार आर्ट एंड कल्चर, हायटेक बंगलोर, 2000
31. विजय अग्रवाल, सिनेमा की संवेदना, सतसाहित्य प्रकाशन, मोशन पिक्चेर्स, 1993

32. डॉ. योगेन्द्र प्रतापसिंह, मीडिया और साहित्य,साहित्य रत्नालय, कानपूर, 2010
33. सं.प्रा. मुकेशकुमार कांजिया,साहित्य और समाज,अमर पब्लिकेशन, हंसपुरम, कानपूर,2013
34. Judith Butler, Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity, Routledge, 1990
35. Kausthav Bakshi& Rohit K Dasaguptha, Queer Studies,Orient Black swan,2019
36. Scott F . Keisling, Laungage, Gender and Sexuality An Introduction, roultedge,2019 Annamarie Jagose, Queer Theory: An Introduction, NYU Press, 1996
37. Michel Foucault , The History of Sexuality, Vol. 1: An Introduction, Pantheon Books,1978
38. Lee Edelman, No Future: Queer Theory and the Death Drive,Duke University Press, 2004
39. Max H. Kirsch , Queer Theory and Social Change,Routledge,2000
40. Steven Seidman ,Queer Politics and Social Theory, Wiley-Blackwell, 1995
41. Riki Wilchins,Queer Theory, Gender Theory: An Instant Primer, Alyson Books,2004
42. Robert Leckey and Kim Brooks, Queer Theory: Law, Culture, Empire,,Routledge, 2010
43. Himadri Roy, Reel and the Real portrayal of Gay Men in Bollywood Films,Atlantic Publishers,2020
44. Beverly Greene&Geogry M Herek, Lesbian and gay psychology, Volume 1,Sage Publications,1994
45. Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity, Judith Butler, Routledge, 1990,
46. The History of Sexuality, Michel Foucault, Vintage Books, 1971
47. Fire: A Queer Film Classic (Queer Film Classics) Kindle Edition

48. Ajay Kumar& Vasudha.N&C A Sathiya, LGBTQIA + Community Rights and Discrimination, Bharati Publication,New delhi, 2023.
49. Editor Sathish Chandra, Psychosocial and Educational Problems of LGBTQ Community in India, IP Innovative Publication Private Limited, New Delhi, 2019
50. Shakuntala Devi, World of Homosexuals, Vikas Publishing House, 3rd Edition, New Delhi, 2005

पत्र पत्रिकाएँ

1. **बोहल शोध मजुषा**-किन्नर विशेषांक ISSN-2395-7115, 2021
2. लक्ष्मी एवं प्रो. संजीव कुमार दुबे, लोकप्रिय हिंदी सिनेमा और स्त्री विमर्श, **अपनी माटी,** मार्च 2022
3. रविकांत- हिन्दी फिल्म अध्ययन, माधुरी का राष्ट्रीय राज मार्ग,**माधुरी सिने पत्रिका** 2011
4. आशीष कुमार, सिनेमा, साहित्य और भारत-विभाजन, **सहचर ई-पत्रिका**,ISSN 2395-2783, 2018
5. अंजली देशपांडे, 21वीं सदी की समलैंगिक कहानियाँ: पहचान और परख,**समालोचन,** अगस्त 2022
6. एम. वेंकटेश्वर, हिंदी फिल्में और सामाजिक सरोकार, **साहित्य कुंज,** ISSN 2292-9754, 2024
7. डॉ. बिमलेंदु तीर्थंकर, हिंदी सिनेमा और भारतीय मूल्य-बोध, **अपनी माटी**, दिसंबर 2022
8. पटकथा, अंक- नवंबर-दिसम्बर 1986.

हिन्दी / अंग्रेंजी पत्र

- दैनिक भास्कर
- दैनिक जागरण
- हिन्दुस्तान
- राजस्थान पत्रिका
- अमर उजाला
- Hindustan Times
- Indian Express
- The Hindu
- Times of India

कोश ग्रंथ

1. विभिन्न लेखक मंडल, **हिंदी साहित्य ज्ञानकोश (सात भाग),** केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 2022
2. नागरी प्रचारिणी सभा**, हिंदी शब्द सागर (आठ खंडों में),** नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1965 (पहला संस्करण), पुनर्प्रकाशन 2020
3. डॉ. हरदेव बाहरी**, अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश,** राधाकृष्ण प्रकाशन, 2020
4. **बृहत् हिंदी कोश: खंड-2,** केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार 2022
5. डॉ. अरविंद कुमार**, समांतर कोश,** राजकमल प्रकाशन, 1996 (पहला संस्करण), पुनर्प्रकाशन 2022
6. सक्सेना, रामप्रकाश, **वर्धा हिंदी शब्दकोश**, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय 2013.

Sl.No	WEBSITE
1.	https://www.sexualdiversity.org/edu/theory/
2.	https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/lgbt-rights-and-sections-377
3.	https://www.groundreportindia.org/books/2019/01/19/sangeeta-gandhi/
4.	https://easysociology.com/general-sociology/queer-theory-an-introduction/
5.	https://www.drishtiias.com/hindi/blog/lgbtqia-a-detailed-discussion
6.	https://plato.stanford.edu/entries/queer-theory/
7.	https://www.dukeupress.edu/queer-studies/
8.	https://hindi.lawrato.com/इंडियन-कानून/आईपीसी/धारा-377
9.	https://www.ndtv.com
10.	https://www.thebetterindia.com
11.	https://humsafar.org
12.	https://www.queer-ink.com
13.	https://www.drishtiias.com/blog/lgbtqia-representation-in-bollywood
14.	https://www.sjsu.edu/faculty/harris/Eng101_QueerDef.pdf
15.	https://www.ijirmf.com/wp-content/uploads/IJIRMF201703001.pdf
16.	https://www.academia.edu/121655336/Queering_the_Norms_From_Taboo_to_Acceptance_of_Queer_Themes_in_the_Contemporary_Hindi_Cinema
17.	https://ijelr.in/4.1.17a/293-298%20%20%20SHUCHI%20GUPTA.pdf
18.	https://www.acadpubl.eu/hub/2018-119-12/articles/7/1818.pdf
19.	https://www.academia.edu/78099859/Hero_loves_Hero_Understanding_the_Changing_Rendition_of_Sexuality_through_the_Movie_Shubh_Mangal_Zyada_Saavdhan
20.	https://www.researchgate.net/publication/344252218_Selected_Bollywood_Films_as_Sites_of_LGBTQ_Contestation_Assertion_and_Cultural_Disruption
21.	https://ijcrt.org/papers/IJCRT2306315.pdf
22.	https://www.ijrssh.com/admin/upload/29%20Pooja%20Bhardwaj%2001592.pdf

23.	https://www.webology.org/data-cms/articles/20240224103254pmWEBOLOGY%2018%20%283%29%20-%20199.pdf
24.	https://ijcrt.org/papers/IJCRT2203379.pdf
25.	https://www.webology.org/data-cms/articles/20240224103254pmWEBOLOGY%2018%20%283%29%20-%20199.pdf
26.	https://transreads.org/wp-content/uploads/2019/03/2019-03-17_5c8d91691657f_riki-wilchins-queer-theory-gender-theory-an-instant-primer-1.pdf
27.	https://transreads.org/wp-content/uploads/2021/07/2021-07-15_60f03fcc333b7_david-m-halperin-the-normalization-of-queer-theory.pdf
28.	https://www.youtube.com/watch?v=ot0Wzj99sHQ
29.	https://www.youtube.com/watch?v=jHHEosr9H-k
30.	https://www.youtube.com/watch?v=KGhkMgKpj4A
31.	https://www.youtube.com/watch?v=example1
32.	https://www.youtube.com/watch?v=example2
33.	https://www.youtube.com/watch?v=example7
34.	https://www.intofilm.org/resources/1820
35.	https://courses.lumenlearning.com/suny-lgbtq-studies/chapter/lgbtq-film-and-media-studies-critical-conversations/
36.	https://www.cinema.ucla.edu/collections/inthelife/lgbtq-resources
37.	https://www.cinema.ucla.edu/collections/inthelife/lgbtq-resources
38.	https://www.academia.edu/88700441/Gender_Representation_in_Bollywood_A_Study_Of_Queer_Characters_Across_Regional_Indian_Films
39.	https://www.academia.edu/113072707/Social_and_Psychological_Dimensions_of_Queer_Representations_in_Indian_Cinema_An_Interpretative_Analysis
40.	https://www.bbc.com/hindi/entertainment-61973717

Avinashilingam Institute for HomeScience and Higher Education for Women
(Deemed to be University Estd. u/s 3 of UGC Act 1956, Category 'A' by MHRD
Re-accredited with A++ Grade by NAAC. CGPA 3.65/4, Category I by UGC
Coimbatore - 641 043, Tamil Nadu, India

Appendix L2

(Item No 5 of Check List) Details of Research Publications

S.No	Article	Journal	Other Details Vol/No/Page No/ Year	Published in UGC-CARE / Scopus Indexed/ Web of Science
1	Cinemai dayare mein asmita ki talash: Third Gender ke Sandhay mein	Sankalya ISSN (2277-9264)	VOL NO: 52 ISSUE NO: 2 Page no: 144-148 April-June 2024	UGC CARE GROUP 1
2	Third Gender Saugharsh ki dasthavej: kinnar katha Upanyas ke Sandhay Mein.	Keral Jyothi ISSN (2320-9976)	Paper Accepted (November 2024)	UGC CARE GROUP 1

*Proof of list of Journals from Internet to be attached along with copies of reprints.

Scholar : [signature]

Supervisor : [signature] 12-08-2024

Checked By: [signature] 12-08-2024

HoD/Dean of Respective School

ॐ

The scholar Miss. Abhirami, C.J (20PHHIF002) has published/ Paper accepted her research articles in the following journals:

1. Sankalpa - is indexed and active in UGC care Gp. I from July 2022 to present and
2. Keral Jyothi - is indexed and active in UGC care Group I from April 2022 to present. Her paper accepted in this journal.

This may be considered.

J. Jh[illegible]
12.08.24.

संकल्य / ISSN 2277-9264

सिनेमाई दायरे में अस्मिता की तलाश : थर्ड जेंडर के संदर्भ में

अभिरामी सी. जे. (शोध छात्रा)
डॉ शोभना कोक्कडन (शोध निर्देशिका)

शोध सार : समाज से बहिष्कृत या उपेक्षित अल्पसंख्यकों को केन्द्र में रखकर वर्तमान युग में अधिक संख्या में चर्चा एवं परिचर्चाएँ होती हैं। परिणामस्वरूप समाज से बहिष्कृत लोगों की वैयक्तिक स्वतंत्रता व अस्मिता को लेकर हाल ही में बदलाव दिखाई पड़ा। इस सामाजिक बदलाव में साहित्य और फिल्म की एक अलग अस्तित्व एवं पहचान है। प्रगतिशील परिप्रेक्ष्य में सिनेमा एक ऐसा प्रभावशाली या सशक्त माध्यम रहा है जिसने सदियों से समाज को सर्वाधिक प्रभावित किया है। सिनेमा मात्र मनोरंजन का साधन ही नहीं बल्कि सामाजिक–राजनीतिक मुद्दों पर प्रतिरोध या अनीति को दर्शाने का एक मजबूत माध्यम है। दलित, आदिवासी, किन्नर, क्वीर जैसे हाशियेकृत समूह के प्रति समाज की संवेदनशीलता को जगाने और मानसिकता को बदलने का प्रयास फिल्म ने किया है।

बीज शब्द : हिंदी फिल्म, थर्ड जेंडर, हाशियेकृत समूह, हिजड़ा।

मूल आलेख : हिंदी सिनेमा में ट्रान्सजेंडर की बात की जाए तो सिनेमा में भी यह समाज पूरी तरह हाशिए पर ही रहा है। ट्रान्सजेंडर का जीवन, उनकी समस्याओं, उनकी सामाजिक स्थिति, समाज में इनका अस्तित्व जैसे मुद्दों को तथाकथित सभ्य समाज ने नज़रअंदाज़ किया है। लेकिन भारत में बनने वाली थर्ड जेंडर पर केंद्रित हिंदी फिल्मों में महेश भट्ट की सड़क और तमन्ना, कल्पना लाजमी की दरमियाँ आदि हिंदी सिनेमा की ऐसी फिल्में हैं जो हिजड़ों की समस्याओं एवं संघर्षों को रेखांकित करती हैं। इन फिल्मों की विशिष्टता यह है कि इनमें हिजड़ों के प्रति झुकाव लिए हुए उनके अस्तित्व के अधिकारों की आवाज उठाने का प्रयास किया गया है।

विश्व में हिजड़ों से संबधित काफी फिल्में बनी हैं, लेकिन भारत में हिजड़ों को लेकर बहुत ही कम फिल्में देखने को मिलती हैं। सन् 1991 में आई फिल्म सड़क पहली ऐसी मुख्यधारा की फिल्म है जिसने प्रमुखता से हिजड़े पात्रों को पर्दे पर लाया है।

सड़क (1991)

महेश भट्ट द्वारा निर्देशित फिल्म सड़क 1991 में प्रदर्शित हुई। इस फिल्म में खलनायक के रूप में एक हिजड़ा चरित्र की भूमिका है जो अपने अमानवीय चरित्र से सभी को अचंभित कर देता है। इस फिल्म ने हिजड़ा समुदाय की खराब छवि प्रदर्शित की है। प्रस्तुत फिल्माएँ कथानक वेश्यावृत्ति, देह व्यापार पर आधारित है।

फिल्म की खलनायक महाराणी हिजड़ा है जो वेश्यावृत्ति का धंधा चलाती है, जो आर्थिक स्थिति से कमजोर लड़कियों को बहला–फुसलाकर उन्हें

अपने कोठे की रौनक बनाती है। वह अपने इस धंधे को बनाए रखने के लिए कोई भी अनुचित काम कर गुजरने को तैयार है। यहाँ तक कि उसे लोगों के खून करने से भी परहेज नही है। नायक रवि की बहन रूपा को भी महाराणी अपने धंधे में जोड़ने की कोशिश करती है इसी बीच रूपा की मृत्यु हो जाती है। रूपा की मृत्यु में भी महाराणी की भूमिका है। इस हिंसक घटना से रवि को गहरा आघात लगता है। रवि वेश्यालय में बंधनस्थ पूजा से प्यार करता है लेकिन इस रिश्ते को महाराणी स्वीकार नहीं करती और उन्हें अलग करने की कोशिश करती है। इस दौरान पूजा को अपने कोठे में लाने के लिए कई कत्ल करती व करवाती है। लेकिन अंततः वह पूजा और रवि दोनों को अलग करने में विफल हो जाती है।

हिजड़ा खलनायक की भूमिका अभिनेता सदाशिव अमरापुरकर ने बड़ी ही सशक्तता से निभाई है। फिल्म में महाराणी खुद को अभिशप्त मानती है। महाराणी ऐसे हिजड़ों का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने हिजड़ा होने का प्रतिशोध समाज से लेना चाहते हैं। यही प्रतिशोध की भावना महाराणी को क्रूर और अमानवीय बना देती है। फिल्म में खलनायक महाराणी की निष्ठुरता को देखकर उसके कोठे के ग्राहक उससे कहते हैं कि "तुम में कोई इंसानियत नाम की चीज़ है कि नही?"[1] तब महाराणी कहती है "लोगों ने मुझे न मर्द कहा हिजड़ा कहा, हम लोगों को कभी किसी ने इंसान समझा ही कहाँ जो हमसे इंसानियत की उम्मीद की जाए।"[2] फिल्म का यह संवाद हिजड़ा होने के दर्द को बखूबी दर्शाता है जो दर्शकों को सोचने में मजबूर करता है कि आखिर हम इन्हें इंसान का दर्जा क्यों नहीं देते हैं। फिल्म ने कई सामाजिक मुद्दों को उजागर करने का प्रयास किया है, जैसे कि गरीबी, जातिवाद, राजनीतिक असमानता, नेताओं के भ्रष्टाचार और आत्मनिर्भरता की मुद्दे आदि। इस फिल्म में हिजड़े की नकारात्मक प्रस्तुति के साथ साथ कुछ सीमा तक हिजड़ों की स्थिति को प्रकाशित करने की चेष्टा निश्चित रूप से की गई है।

सन् 1991 से 1997 ई. के बीच, हिंदी फिल्मों में ट्रान्सजेंडर के चित्रण में कोई बदलाव नहीं हुआ। इस दौरान, कुछ फिल्मों में ट्रान्सजेंडर किरदारों का सिर्फ चित्रण ही हुआ है, जैसे 1991 ई. में प्रदर्शित 'दिल है कि मानता नहीं' फिल्म में अमीर खान ने एक हिजड़े के किरदार को निभाया था, जिसने समाज में स्थान प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया। सन् 1995 ई. में आई फिल्म 'सच्चे का बोल बाला' में अमिताभ बच्चन ने एक ट्रांसजेंडर के किरदार को आत्म–स्वीकृति और समर्थन के साथ पेश किया। इन फिल्मों ने समाज में ट्रान्सजेंडरों की स्थिति को प्रस्तुत करके सामाजिक बदलाव की दिशा में कदम बढ़ाने की कोशिश की।

तमन्ना (1997)

महेश भट्ट द्वारा निर्देशित फिल्म तमन्ना (1997) एक हिजड़ा टिक्कु (परेश रावल) और उनकी बेटी तमन्ना (पूजा भट्ट) के इर्द गिर्द कहानी बुनती है। फिल्म का कथानक यथार्थ से जुड़ा है। टिक्कु को एक नवजात शिशु लावारिस मिलता है। शिशु बच्ची को छोड़ देने की सलाह उसके दोस्त सलीम ने दी। सलीम का मानना है कि इस समाज में एक अनाथ बच्ची को गोद ले के पालन पोषण करना नामुमकिन है। टिक्कु ने जवाब दिया कि "ये मेरी बच्ची

है, ये बच्ची मेरे जीने का बहाना है। मेरी जिंदगी की तमन्ना है।"[3] टिक्कु बच्ची की परवरिश करता है।आठ साल तक अपने ही पास रखकर पाल पोस कर तमन्ना को बड़ा करता है। बाद तमन्ना की पढाई के लिए दिन रात मेहनत करके उसे सेंट मेरी हाई स्कूल (बोर्डिंग) में शिक्षा का प्रावधान करता है। बचपन से लेकर आज तक तमन्ना को यह ज्ञात नहीं था कि उसका पिता एक हिजड़ा है। एक दिन वह अचानक अपनी पढ़ाई छोड़कर अपने पिता से मिलने आती है तब वह टिक्कु को एक हिजड़े के रूप में देखकर डर जाती है। तमन्ना कहती है कि "मुझे यह सोचकर घिन आती है कि इस आदमी ने कभी मुझे छुआ होगा। एक हिजड़ा मेरा पिता कैसे हो सकता है।"[4] वह अपने पिता को अपना नहीं मानती और घर छोड़कर चली जाती है। बाद में टिक्कु तमन्ना से माफी माँगकर कहता है कि "मैं कैसे कहता कि मैं एक हिजड़ा हूँ। अब सलीम भाई(दोस्त)..., मुझे ऊपर वाले ने ऐसा बनाया उसमें मेरा क्या दोष है। मेरे पैदा होने पर मेरा बस थोड़े ही था, वह तो अल्लाह की मजट्ट थी, मेरा क्या दोष है बेटी।"[5] बाद में टिक्कु को तमन्ना के पिता के बारे में पता चलता है कि उसके पिता एक अमीर पॉलिटिशियन हैं। अपने पिता से मिलने चली गई तमन्ना को अपने ही घर में स्वीकृति नहीं मिलती है। अंत में तमन्ना अपने जैविक पिता को नहीं बल्कि टिक्कु को ही अपना पिता स्वीकार करती है।

एक हिजड़ा की अभिलाषा को लोगों के सामने व्यक्त करने की कोशिश इस फिल्म ने की है। किसी अन्य की बेटी को अपनी ही बेटी मानकर उसके लिए अपने ही जाति और समाज से लड़ना, केंद्रिय पात्र टिक्कु की ममता, मनुष्यता एवं मातृत्व को दर्शाता है। फिल्म में टिक्कु द्वारा व्यक्त अकेलापन, बेरोज़गारी की समस्या, दयनीय आर्थिक स्थिति, आत्म सम्मान का त्याग, पारिवारिक संघर्ष आदि को महेश भट्ट जी ने बखूबी ढंग से परदे पर उतारा है। फिल्म थर्ड जेंडर विषय के साथ साथ कन्या भ्रूण हत्या, पितृसत्तात्मक समाज, घरेलू हिंसा जैसे मुददों को भी सामने लाने की कोशिश करती है। फिल्म सामाजिक मानसिकता में सकारात्मक बदलाव की पहल करती है।

दरमियाँ इन बिट्टवीन (1997)

हिजड़ा को केंद्रीय भूमिका में रखते हुए कल्पना लाजमी दरमियाँ इन बिट्टवीन (1997) नामक फिल्म बनाई है। फिल्म में इम्मी जो कि हिजड़ा पात्र है को बड़े ही नाजुक ढंग से चित्रित करने का प्रयास किया गया है, जो दो मुख्य लैंगिक पहचानों और समुदायों के मध्य फंसी हुई है। फिल्म अभिनेत्री ज़ीनत बेगम अपने हिजड़े बेटे इम्मी को समाज के डर से अपना बेटा कहने का साहस नही करती है। इसलिए माँ को इम्मी आपा कहकर बुलाता है। समाज के सामने इम्मी ज़ीनत का भाई है। लेकिन हिज़डा जातिकी नेता चंपा को इम्मी की असलियत पता है और वो इम्मी को अपनी जाति बिरदारी से जोड़ना चाहती है। एक दिन दोस्तों के साथ खेलने गया इम्मी रोते हुए घर आता है क्योंकि उसके दोस्तों ने उसके स्त्रैण अंग देखकर उसे नामर्द कहा है। इसी बीच चंपा इम्मी से कहता है कि "तुम भी मेरी तरह एक हिजड़ा हो।"[6] अपनी पहचान को लेकर भयभीत इम्मी से ज़ीनत कहती है कि तुम भी बाकी लोगों की तरह एक सामान्य बालक हो। ममत्व में ज़ीनत अपने पास इम्मी को रखकर

उसका देखभाल करती है। इम्मी के बड़ा होने के बाद उसे लगता है कि उसे तो बचपन में ही हिजड़ों को को दे दिया जाना चाहिए था क्योंकि वह पुरुष नहीं, हिजड़ा था। बाद में पितृसत्ता द्वारा संचालित समाज में रहने से भयभीत होकर वह हिजड़ा समाज में अपने कदम रखता है। लेकिन हिजड़ा समाज में निहित देह व्यापार के धंधे की कड़वी सच्चाई इम्मी को न सिर्फ शारीरिक बल्कि भावनात्मक तौर पर भी आहत करती है। हिजड़ों की अमानवीय दुनिया से भी वह भाग निकलता है। बाद में वह अपनी अभिनेत्री माँ की सहायक प्रंबधक के रूप में कार्य करता है। लेकिन आर्थिक समस्या के कारण फिर से उसे हिजड़ा समाज में सम्मिलित होना पड़ता है। परंतु देह व्यापार न करने के कारण पुरुषवादी समाज उसे जबरन नोचता–खसोटता है। इसलिए वह हिजड़ा बिरदारी को हमेशा के लिए छोड़ देता है। हिजड़ों द्वारा इम्मी को वापस हिजड़ा बिरादरी में लाने की भरसक कोशिश की जाती है परन्तु इम्मी के दृढ़ प्रतिरोध के आगे उन्हें भी हार माननी पड़ती है। फिल्म के केंद्रीय पात्रको हिजड़ा समुदाय या समाज से अलग सामाजिक परिवेश में रखकर दिखाने की कोशिश की गयी है, इसके बावजूद इस समुदाय के प्रति भी एक तरह की सहानुभूति फिल्म में दिखाई देती है। फिल्म में हिजड़ा समुदाय के लोग अपने लिए मताधिकार और खुद के नारकीय जीवन जीने की मजबूरी पर बात करते हुए भी दिखाए गये हैं।

हिजड़ों की समस्याओं और उनके साथ हो रहे दुर्व्यवहार को प्रदर्शित करते हुए समाज की मुख्यधारा में पहुँचाने के लिए इन फिल्मों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ममता एवं मातृत्व का चित्रण दोनों फिल्मों में केंद्रीय चरित्र की भूमिका में है। ये फिल्में तथाकथित सभ्य समाज में हिजड़ों को लेकर परंपरागत नकारात्मक मान्यताओं पर कुठाराघात करते हुए उसपर पुर्नविचार करने की कोशिश करती हैं। समाज के सम्मुख इस उपेक्षित समुदाय को देखने–परखने के लिए एक नया दृष्टिकोण देकर सिनेमा के इतिहास में इन फिल्मों ने अविस्मरणीय योगदान दिया है।

हिजड़ा समाज एवं हिजड़ों की जिंदगी को लेकर बहस काफी जोरों पर है। इनकी दारुण स्थितियों को देखते हुए उच्चतम न्यायालय ने उनके पक्ष पर खड़े होकर कहा कि "हमारे समाज का कार्यस्थल, दुकान, मॉल, सिनेमा तथा अस्पताल जैसे सार्वजनिक स्थलों पर हिजड़ों का मज़ाक बनाता है, गालियाँ देता है, दरकिनार करता है और अस्पृश्यों की तरह व्यवहार करता है। समाज में यह नैतिक विफलता ही है कि हम भिन्न लैंगिक अस्मिता को अपने में समावेशित नहीं कर पाते हैं, जो हमारे बीच के हैं, हमारा समाज उन्हें अंगीकार नहीं कर पाता। यह एक खास तरह की मानसिकता की अभिव्यक्ति है, जिसे हमें बदलना है।"[7] भारत जैसे देश में स्वयं की अस्मिता तथा पहचान तभी हो पाती है जब वे अपनी अस्मिता को कही दर्ज कर पाते हैं। सन् 2014 ई. में पारित संसद के बिल के तहत स्त्री पुरुष के साथ एक तीसरे लिंग के रूप में 'ट्रान्स जेंडर' को शामिल किया गया। कानूनी अधिकार तो इन्हें प्राप्त हो गया लेकिन समाज में इन्हें स्वीकार करना अभी भी शेष है।

संदर्भ ग्रंथ

1. फिल्म– सड़क, 1991 दिसंबर, महाराणी और ग्राहक के बीच के मध्य संवाद
2. फिल्म–सड़क, 1991 दिसंबर, महाराणी और ग्राहक के बीच के मध्य संवाद
3. फिल्म–तमन्ना, 1997, टिक्कु और सलीम के मध्य संवाद
4. फिल्म–तमन्ना, 1997, टिक्कु और तमन्ना के मध्य संवाद
5. फिल्म–तमन्ना, 1997, टिक्कु तमन्ना और सलीम के मध्य संवाद
6. फिल्म–दरमियाँ इन बिट्टवीन, 1997, चंपा और इम्मी के मध्य संवाद
7- National legal service authority, supreme court of India 15, ab-20N

सहायक ग्रंथ

1. राही मासूम रज़ा, सिनेमा और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, 2001
2. डॉ. इकरार अहमद्दे, किन्नर विमर्श साहित्य के आईने में, अनुसंधान पब्लिशेर्स, 2017
3. डॉ. शगुफ्ता नियाज़, थर्ड जेंडर के संघर्ष, विद्या प्रकाशन, 2019
4. शरद सिंह, थर्ड जेंडर विमर्श, समायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019
5. ललिता जोशी, बॉलिवुड पाठ विमर्श के संदर्भ, वाणी प्रकाशन, 2012
6. डॉ. के इन्दु वी, किन्नर और फिल्म, प्रवडा बुक्स, 2022
7. डॉ. के वनजा, क्वीर विमर्श, वाणी प्रकाशन, 2021

संपर्क : अविनाशीलिंगम इनस्टीट्यूट फॉर होम साइन्स एंड हायर एजुकेशन फॉर विमेन कोयम्बत्तूर– (तमिलनाडु) 641043, Ph. 9995931963,
Email ID : abhirami97june@gmail.com

थर्ड जेंडर संघर्ष की दस्तावेज : 'किन्नर कथा' उपन्यास के संदर्भ में

अभिरामी सी जे

विश्व में सामाजिक स्तर पर स्त्री और पुरुष दो लिंगों को ही मान्यता दी गई है। इन्हीं दो विपरीत लिंगों को सृष्टि का आधार माना जाता है, लेकिन इन दो मान्यता प्राप्त लिंगों के अतिरिक्त एक लिंग ऐसा भी है, जो न तो गर्भ धारण कर सकता है और न ही उसे हमारा समाज 'स्त्री' या 'पुरुष' की श्रेणी में रखा है। इस वर्ग को समाज में, थर्ड जेंडर, नपुंसक, हिजड़ा, किन्नर, छक्का, मौगा, अरावली, खोजा आदि कई नामों से पुकारा जाता है। थर्ड जेंडर जैविक रूप से समाज का हिस्सा होते हुए भी इनकी यौनिक अस्पष्टता के कारण समाज इन्हें अलगाव में रखते है।

बीज शब्द : थर्ड जेंडर, उपन्यास, किन्नर कथा, हिजडा,सामाजिक समस्या।

आज हिन्दी साहित्य के माध्यम से साहित्यकारों ने दलित, स्त्री, आदिवासी जैसे समाज के उपेक्षित वर्ग के साथ-साथ हिजडा के संघर्ष ग्रस्त जीवन का भी परत-दर-परत उजागर किया है। सन् 2011 में प्रकाशित महेन्द्र भीष्म जी के अपन्यास 'किन्नर कथा' हिजडा जीवन की त्रासदी, अकेलापन, परिवार से विस्थापन, अस्तित्व की समस्या, समाज से तिरस्कार को सहते किन्नरों के जीवन का मार्मिक चित्रण किया गया है। उपन्यास का कथ्य इस प्रकार है- जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के बाद भी जमींदारी प्रथा के अवशेष जगतराज सिंह बुंदेला के घर जन्मी जुड़वी सन्तानों सोना और रूपा में से सोना के 'चन्दा'(हिजडा) बनने की कहानी है। रूपा के साथ ही महल में जन्मी सोना, रूप-रंग में समान होने के बावजूद अपूर्ण स्त्री होने के कारण न केवल अपने पिता ठाकुर जगतराज सिंह द्वारा अस्वीकार कर दी जाती है, बल्कि दीवान पंचम सिंह द्वारा उसे मार डालने का आदेश भी दिया जाता है। सोना की मासूमियत और भोलेपन से प्रभावित होकर दीवान पंचम सिंह उसे किन्नर गुरु तारा को सौंप देता है, जहाँ उसका पालन-पोषण चंदा के रूप में होता है। बाद में जब चंदा बड़ी होती है, तो उसका मनीष से प्रेम संबंध होता है और अंत में विदेश में ऑपरेशन कराकर चंदा के पूर्ण स्त्री बनने की तैयारी और आश्वासन के साथ उपन्यास का सुखद अंत होता है।

इस उपन्यास समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं के साथ-साथ थर्ड जेंडर जीवन के अनेक संघर्षों को निरूपित करता है। जैसे :

पारिवारिक तिरस्कार : हिजडा को जीवन के प्रारंभ से लेकर अंत तक अनेक चुनौतियों का सामने करना पड़ता है। जिसमें अपने ही घर परिवार से बहिष्कृत होना ही उनके लिए बडा संघर्ष है। आमतौर पर जहाँ परिवार वाले अपनी हिजडा संतान को समाज के डर से तुरंत त्याग देने का प्रयत्न करते हैं। 'किन्नर कथा' में भी यही अवस्था पायी जाती है। समाज से आने वाली बुरी नज़र, कठोर सवालों से बचने और समाज में अपनी मर्यादा कायम रखने के लिए सोना के पिता अपनी बेटी की सच जानने के बाद तुरंत ही परिवार से अलग करता है। दीवान पंचम सिंह की मदद से सोना को जान से मार डालने की आदेश देते हैं। माँ की गोद से छीनने और पंचम सिंह के हवाले करने के बीच एक पिता के मन में जो अंतर्द्वद्व चलता है यह पंचम सिंह के शब्दों में- "अरे! यह क्या करने जा रहा है? जिस बेटी को प्राणों से बढ़ कर चाहा, जिसकी एक छींक में या जिस्म पर लगी एक खरोंच से वह सारी गढ़ी को सर पर उठा लेता था आज उसी बेटी की यह कैसी विदाई करने जा रहा है ? धरती फट जाय और वह उसमें समा जाय । अर्धमूर्छित-सी विक्षिप्त सी हो रही माँ की गोद से छीन कर अपनी बेटी को ले आया था वह। कैसे? कैसे दे वह पंचम सिंह के हाथों में अपनी पुत्री को काल के गाल में समा जाने के लिए"[1]" फिर भी जगतराज के लिए उसकी मर्दानगी को एक हिजडा संतान

के जन्म से ठेस लगती है। जगतराज सिंह के सामने हिजडा केवल हिजडा ही है, कोई सामाजिक रिश्ता नहीं है उसका। यह बात आज के थर्ड जेंडर के प्रति होने वाले परिवार की मनोदशा को चित्रित करता है।

पारिवारिक विस्थापन हिजडा समुदाय की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण त्रासदी है। इस उपन्यास में एक और हिजडा कथापात्र है तारा, धनी परिवार में पली बडी तारा हिजड़ा होने के कारण घर से बेदकल हो गया। लेकिन तारा परिवार के साथ अपने संबंध बनाए रखने के लिए कई प्रयास करती है, लेकिन सारे प्रयास विफल रहे जैसे अपनी माँ और पिता की मृत्यु की खबर समय पर न मिलना, और यहां तक कि श्मशान घाट पर अपनी माँ को अंतिम बार देखने से भी रोकते है। वहाँ पर तारा के भतीजे ने धमकाते हुए कहा था ' तू हिजड़ा है, हिजड़ा, हमारा तेरे दर से कोई नाता नहीं, तू हमारा कुछ नहीं लगता, भाग जा यहाँ से, क्यों हमारी नाक कटाने में तुला है, हिजड़ा कहीं का"[2] माँ की खोक से जन्म होते हुए भी उन्हें अपने परिवार में स्वीकृति माँगना कितना दर्दनाक है। कथाकार ने हिजडा के जीवन की दयनीय अवस्था बड़ी ही बारीकी से दर्शायी है । विडम्बना तो यह है कि इनके अपने घर-परिवार के लोग ही इन्हें पसंद नहीं करते। उपन्यास में तारा, चंदा, सोनिया जैसे बहुत से किन्नर अपनी समस्याओं के जाल में जकड़े हुए हैं। इन घटनाओं से यह साफ पता चलता है कि परिवार के लिए खानदान का स्वाभिमान और परिवार की इज्जत ही महत्व है। इस प्रकार किन्नर कथा उपन्यास में पारिवारिक जीवन की समस्याओं का चित्रण मिलता है।

अकेलापन और आत्म संघर्ष की समस्या : साधारण नवजात शिशु की ज़िंदगी और एक ट्रांसजेंडर बच्चे की परिस्थितियाँ काफी अलग हैं। अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए, ट्रांसजेंडर बच्चे को माता-पिता अपने घर के चार दिवारों के अंदर ही रखते हैं। कुछ लोग समाज के डर से बच्चे को बाहर फेंक दिया जाता है, और कभी-कभी उसे हिजड़ों के गिरोह को दे दिया जाता है। इस कहानी का केंद्रीय पात्र तारा को भी ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ता है। एक पिता अपने बच्चे के लिए सब कुछ त्यागने को तैयार रहता है लेकिन जब उसे पता चलता है कि उसका बच्चा थर्ड जेंडर है तो अपने सम्मान और परिवार की गरिमा के खातिर वह उसे मरवाने में भी संकोच नहीं करता है। पिता जगतराज सिंह ने पंचम सिंह से सोना को 'इन्दौरा की डांग' पर ले जाकर मारने का आदेश देते है लेकिन पंचम सिंह सोना की मासूमियत के आगे हार जाते हैं और उसे ना मारने का निश्चय कर स्वामीजी के आश्रम ले जाते हैं। वहाँ सोना की मुलाकात तारा से होती है। चौदह-पन्द्रह वर्ष की अवस्था में तारा को पारिवारिक विस्थापन सहना पड़ा। हिजड़ा होने की सज़ा भुगत रही तारा अपने दुःख को दोस्त मातिन से इस प्रकार व्यक्त करती है- "मातिन ! भगवान ने मेरे साथ ऐसा अन्याय क्यों किया? मैं हिजड़ा हूँ तो इसमें मेरा क्या कसूर? मुझ निर्दोष को किस बात की सजा मिल रही है? मेरा अपना कौन है ? घर-बार, माँ-बाप, भाई-बहन, बच्चे कोई नहीं है मेरा, जिसे मैं अपना कह सकूँ, सब कुछ होते हुए भी कोई मुझसे रिश्ता नहीं रखना चाहता, कोई मुझे अपनाने को तैयार नहीं है। बचपन से आज तक बस अपने आप में दर्द पीते रहते हैं । दूसरों को हँसाते आये हैं, उनकी खुशियों में शरीक होते आये हैं, आशीष के सिवा कभी किसी को कुछ नहीं दिया, ईश्वर से बस एक शिकायत है। आखिर क्यों उसने हमें ऐसा बनाया? क्यों हिजड़ा होने का दण्ड दिया? काश! हम भी औरों की तरह स्त्री या पुरुष होते, हिजड़ा होना कितनी बड़ी सजा है, यह कोई हिजड़ा ही समझ सकता है, दूसरा कोई नहीं, कोई नहीं, कभी नहीं"[3] सत्य यह है कि समाज में हिजडा होकर पैदा होने से बचपन से ही प्रेम और सहानुभूति के बदले उपेक्षा, तिरस्कार और घृणा ही मिलती है।

परिवार की यह उपेक्षा तारा के मन में अनेक प्रश्न खड़ा कर देता है। वह सोचती है उसके हिजड़ा जन्म लेने से उसके माता पिता की क्या गलती थी? हिजड़ा रूप या उसकी क्या गलती है? फिर ईश्वर का तमाचा उसपर

ही क्यों पड़ा? ईश्वर ने उसके साथ क्यों ऐसा किया? क्यों किया उसने और उस जैसे अन्य हिजड़ों के साथ? क्यों बनाया उन्हें ईश्वर ने अधूरा और अपमानित रहने के लिए अभिशप्त कर दिया? क्या हम ईश्वरीय पाप की परिणति है ? प्रकृति का क्रूर मजाक है हम सब क्या नन्ही सोना जैसी बच्ची के शेष जीवन के लिए प्रकृति का अभिशाप नहीं है', जिस निर्दोष का जीवन अब उसी की तरह बीतनेवाला है । घर परिवार समाज से बहिष्कृत तिरस्कृत और त्रासदी लिए हुए। जब तक कि जीवन है, त्रासदियाँ उनके साथ हैं, वह जो न नर है, न नारी है, है तो सिर्फ और सिर्फ एक 'हिजड़ा' यही उसकी पहचान है, यही कटु सत्य है।"[4]

उपन्यास हिजडा जीवन की विभिन्न आत्म संघर्षो का चित्रण करके उनके प्रति सहानुभूती प्रस्तुत करता है।

समाज में हिजडा जीवन का चित्रण : समाज में हिजडा द्वारा भुगती समस्याओं एवं सामाजिक तिरस्कृति के कई अच्छा उदाहरण प्रस्तुत उपन्यास में है। उपन्यासकार ने सामाजिक रूप से हिजड़ों के बहिष्कार और एक विशेष अवसर पर उनकी उपस्थिति की चर्चा करता है। इसमें तारा, किन्नरों के प्रति मुख्यधारा समाज के मनोभावों को स्पष्ट करते हुए मातिन से कहती है - "नहीं चलो मातिन! इन लोगों से ज़्यादा बातचीत ठीक नहीं, इनसे हमारे संबंध केवल खुशी के है, नाच गाकर बख्शीश न्यौछावन लेने के बरस, इससे ज़्यादा नहीं। कोई भी हमारा साथ नहीं चाहता, हँसी - टिठोली के अलावा आज तक किसी ने अपने घर में हम हिजडों को दाखिल किया है? अपने बैठक में बिठाकर चाय-पानी को पूछा है? बाज़ार - हाट में साथ-साथ चला है? नहीं न।"[5] यहाँ समाज की संकुचित दृष्टि को चित्रित किया है। समाज नाच-गाने और मनोरंजन के लिए उनके साथ संबंध रखता है। इसके बाद उनको त्याग देते हैं। शादी-विवाह, बच्चे के जन्म और अन्य अवसरों पर उनकी उपस्थिति को अच्छा माना जाता है और इन्हीं चीज़ों से उन्हें वंचित रखा गया है- "मेल-जोल केवल वहीं तक इनकी खुशी, शादी, ब्याह, बच्चों का जन्म या मुण्डन, हमीं बिन बुलाए बेशर्मी से तालियाँ पीटते पहुँच जाते हैं, बिन बुलाए मेहमान की तरह हमें हिकारत की दृष्टि से देखते हैं, कोई नहीं चाहता हमारा साथ दूर भागते हैं हमारी छाया से जैसे हम इंसान न हों, कोई अजूबा हों, अछूत की तरह व्यवहार किया जाता है, हम हिजड़ों से उठो, मातिन हम हिजड़ों के नसीब में जो लिखा है, वे हमें भोगना है, शापित जिंदगी जी रहे हैं हम लोग।"[6] उपन्यास के तहत समाज द्वार पीडित थर्ड जेंडर के जटिल समस्या जैसे अपमान, घृणा, व्यंग्य, उपेक्षा और तिरस्कार को चित्रित किया गया है।

निष्कर्षतः से यह कहा जा सकता है कि उपन्यासकार महेन्द्र भीष्म ने किन्नर कथा उपन्यास के माध्यम से हिजडाओं को उपहास का पात्र नहीं बनने दिया । उपन्यास पढकर स्वयं उनके प्रति सहानुभूति नज़रिया में उन्हें समझाने को पाठक को विवश करता है। थर्ड जेंडर के संघर्ष एवं समस्याओं को पाठकों के सामने लाकर समाज में हाशिये रहे इन समुदाय को मुख्यधारा में उभारने का प्रयास किया है। थर्ड जेंडर भी समाज का अंग ही है उसे भेदभाव की दृष्टि से न देख कर उन्हें ही हम में से एक समझें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महेंद्र भीष्म, किन्नर कथा, सामायिक प्रकाशन संस्करण,2016,नई दिल्ली 11002, पृ 12
2. वही, पृ.51 3. वही, पृ.64 4. वही, पृ.51
5. वही, पृ.66 6. वही, पृ.66

सहायक ग्रन्थ सूची

1. महेंद्र भीष्म, किन्नर कथा, सामायिक प्रकाशन संस्करण,2016,नई दिल्ली 11002,
2. शरद सिंह, थर्ड जेंडर विमर्श, समायिक प्रकाशन, 2019
3. डॉ इकरार अहमद ,किन्नर विमर्श साहित्य के आईने में, अनुसंधान पब्लिशेर्स, 2017

शोध निर्देशिका : डॉ शोभना कोक्कडन

शोध छात्रा , अविनाशीलिंगम इनस्टीट्यूट फॉर होम साईन्स एंड हयर एजुकेशन फॉर विमेन, कोयम्बत्तूर-641043